श्री महेश वंदना

नमामीशमीशान निर्वाणरुपं। विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरुपं ।।

निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं। चिदाकाशमाकाशवासं भजेहं ।।

निराकारऊंकारमूलं तुरीयं। गिरा ज्ञान गोतीतमीशं गिरीशं ।।

करालं महाकाल कालं कृपालं। गुणागार संसारपारं नतोहं ।।

तुषाराद्रि संकाश गौरं गभीरं। मनोभूत कोटि प्रभा श्री शरीरं ।।

स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारुगंगा। लसद्भालबालेन्दु कंठेभुजंगा ।।

चलत्कुंडलं भ्रू सुनेत्रं विशालं। प्रसान्ननं नीलकंठं दयालं ।।

मृगाधीश चर्माम्बरं मुण्डमालं। प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि ।।

प्रचंडं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं। अखंडं अजं भानुकोटि प्रकाशं ।।

त्रयः शूलनिर्मूलनं शूलपाणिं। भजेहं भवानीपतिं भावगम्यं ।।

कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी। सदा सच्चिदानंददाता पुरारी ।।

चिदानंद संदोह मोहापहारी। प्रसीद् प्रसीद् प्रभोमन्मथारी ।।

न यावद् उमानाथ पादारविन्दं। भजंतीह लोके परे वा नराणां ।।

न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं। प्रसीद् प्रभो सर्वभूताधिवासं ।।

न जानामि योगं जपं नैव पूजां। नतोहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यं ।।

जरा जन्म दुःखौघ तातप्यमानं। प्रभोपाहि आपन्नमामीश शंभो ।।

श्लोक :-

रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये।

ये पठन्ति नरा भक्तया: तेषां शम्भुः प्रसीदति ।।

अ.भा. धा. माहेश्वरी सभा